बहू को बहू ही रहने दो ?

जब कोई माँ अपने बेटे की शादी करके बहू घर में लाती है, तब वह अपनी प्रिय समधन को खुश करने के लिए कहती है कि हम आपकी बेटी को बहू बनाकर ले जा रहे हैं, परन्तु इसे हम बेटी बनाकर ही रखेंगे। इसे हम अपनी बेटी से भी अधिक प्यार देगें। उन सब लोगों से मैं हाथ जोड़कर विनती करता हूँ कि ऐसी भूल कभी मत करियेगा। बहू जी को बहू जी बनाकर ही रखिए, उसे अपनी बेटी का दर्जा देने की भूल कभी मत करिए। इसी भूल के कारण मैंने अनेक घर बर्बाद होते हुए देखे हैं। आइए, अब जरा गहराई से इस बात पर विचार करें।

सबसे पहले हमें यह समझ लेना चाहिए कि जैसे कन्या के माता–पिता ने अपनी कन्या का दान किया है, उसी तरह से हमने भी अपने पुत्र का दान कर दिया है और तब दुल्हा–दुल्हन अर्थात नव–दम्पत्ति मिलकर समाज की एक नई इकाई Unit बन जाते हैं। उस नई इकाई को समाज के साथ–साथ हमें भी मान्यता दे देना चाहिए और उनका घर–संसार बसाने में पूर्ण सहयोग करना चाहिए। जैसे कन्या के माता पिता ने अपनी कन्या का घर बसाने में योगदान दिया है, उसी तरह है हमें भी उस नव–दम्पत्ति का घर बसाने में सहयोग करना चाहिए। परन्तु वास्तव में ऐसा होता नहीं है। हम सहयोग करने की बजाए शासन करते हैं और नव–दम्पत्ति को आजादी देने की बजाए घुटन भरा माहोल अनजाने में दे डालते हैं, और जब वे लोग **एक बंगला बने न्यारा** का सपना देखते हैं, तब उनको नालायक और बीबी का गुलाम करार दे देते हैं।

उधर सास अपनी नई बहू को बेटी का दर्जा देकर बहू का यथोचित मान–सम्मान किए जाने का अधिकार भी छीन लेती है। बहू को बेटी बनाने के चक्कर में यह भूल जाती है कि बहू में उसके अपने बचपन के संस्कार होते हैं, उसका परिवेश अलग होता है, उसका पालन–पोषण अलग वातावरण में हुआ है। बहू को अपने नए घर में घुलने–मिलने और ढ़लने में समय लगेगा, परन्तु सास तो अपने पुराने जमाने की दुहाई देकर बहू को उसी पुराने जमाने के अनुसार ढ़लने के लिए बाध्य करती है।

जैसे हमारे घर में कोई मेहमान कुछ दिनों या महीनों के लिए आता है, तब हम उससे बड़ा संभलकर बोलते हैं, उसकी सुख सुविधा का ध्यान रखते हैं। फिर धीरे–धीरे वह हमारे परिवार में घुल–मिल जाता है और हमारे परिवार का सदस्य बन जाता है। उसी तरह से नई बहू के साथ भी व्यवहार किया जाना चाहिए। बेटी तो हमारे ही परिवार में जन्म लेती है, पलती है, बढ़ती है। इसलिए वह तो हमारी आदतों से अच्छी तरह से परिचित होती है, परन्तु नई बहू को हमारे परिवार के एक

एक सदस्य के व्यवहार और आदतों से परिचय करना होता है, उन सबकी भावनाओं का ध्यान रखना होता है, उनके प्रति अपने कर्त्तव्यों के निर्वाह के लिए कठोर परिश्रम करना होता है। इसमें सहयोग करने की जगह यदि हम उसका बहू वाला मान–सम्मान छीनकर उसको बेटी बना लेते हैं और अपनी बेटी जैसे व्यवहार की आशा करने लग जाते हैं, तब यह उस नई–नवेली बहू के साथ घोर अन्याय होगा। इसलिए बहू को बहू ही बनाकर रखें, जिससे कि उचित दूरियाँ बनी रहें और यही दूरियाँ घर की मर्यादाऐं होती है, जिससे घर–परिवार बँधा हुआ रहता है। बेटी बनाने के चक्कर में ये मर्यादाऐं टूट जाती हैं और दोनों ही पक्ष झूँठी आशाएं पाल लेते हैं। ये आशाएं और अपेक्षाएं जब पूरी नहीं होती है, तब दोनों के ही सपने टूटनें लगते हैं। यदि आप अपनी बहू को उचित मान–सम्मान देते हैं, जो कि अपनी बेटी को कभी नहीं दे सकते हैं, तब आप देखेंगे कि आपके घर का वातावरण कितना सुखमय रहता है। वैसे भी कोई भी माता–पिता अपने बेटे का विवाह अपनी बेटी से नहीं कर सकते हैं, तब फिर अपनी नई बहू का दर्जा घटाकर बेटी बनाने की गलती क्यों करते है? इस सच्चाई को स्वीकार करना होगा कि ना तो हमारी सगी बेटी हमारी बहू बन सकती है और ना ही हमारी बहू हमारी सगी बेटी बन सकती है। इस सामाजिक व्यवस्था को स्वीकार करने वाला परिवार सदा सुखी रहेगा।

महत्वपूर्ण बात यह भी है कि जब अपने घर की बेटी यह देखती है कि दूसरे घर की बेटी हमारे घर में आकर बहूजी जगह बेटी जैसा व्यवहार पा रही है, तब उसे लगता है कि उसको मिलने वाले प्यार और अधिकार में कोई बँटवारा करने आ गई है। तब वह सामान्य नारी सुलभ ईर्ष्या से भर उठती है। इस कारण से ननद और नई भाभीजी के बीच में तनाव आ जाता है। यह तनाव घर में भर जाता है और पारिवारिक रिश्ते आपसी कलह के कारण दरकने लगते हैं। इसका एक ही हल है कि नई बहू को बहूजी ही रहने दो, उसे बेटी बनाकर उसका अधिकार मत छीनों। उसका मान–सम्मान बहू की तरह ही करें और अपनी बेटी को भी समझाएं कि बहू को भी मान–सम्मान और प्यार देना इस परिवार के सभी सदस्यों की जिम्मेदारी और उत्तरदायित्व है। तब आपसी रिश्तों में कोई तनाव नहीं आएगा और घर में पूर्ण सामंजस्य रहेगा। सभी रिश्तों में मधुरता और तारतम्यता बनी रहेगी। जैसे चाय और काफी में अंतर होता है और समानता भी होती है। पानी, दूध, चीनी दोनों में डालते हैं, परन्तु चाय की पत्ती और काफी पाउडर अलग–अलग होता है। दोनों का स्वाद भी अलग–अलग होता है। पानी, दूध, चीनी की मात्रा भी अलग–अलग होती है। दोनों को कप या ग्लास में परोसा जा सकता है, फिर भी चाय का टेस्ट अलग और काफी का टेस्ट अलग होता है। हम चाय को काफी नहीं कह सकते हैं और काफी को चाय नहीं कहेंगे। उसी तरह से बेटी को बेटी ही

कहेंगे और बहूजी को बहूजी ही बना कर रखेंगे। दोनों का स्तर Status एक जैसा नहीं हो सकता है।

यहाँ मुझे एक गीत भी याद आ रहा है – **प्यार को प्यार ही रहने दो, इसे रिश्ते का कोई नाम ना दो।** इसी तरह से बहूजी को बहूजी रहने दो, इस रिश्ते को कोई दूसरा नाम ना दो। तब ही परिवार में प्यार और सम्मान बना रहेगा।

आचार्य सत्यनारायण पाटोदिया
नैतिक शिक्षाविद् एवं आध्यात्मिक प्रेरक

मोबाईल– 93148 77066